-:होली के अवसर पर कविता:-

एक बाप के रंग में रंगकर सदा काल की होली मनाओ
रूहानी रंग में रंगकर अपने अंदर उमंग उल्लास जगाओ
होली की अग्नि में जला दो विकारों के अंश और वंश
सम्पूर्ण पवित्रता को धारण कर बन जाओ होली हंस
क्यूँ करें चिंता जब मिल गया हमें विश्वपिता का संग
इसी ख़ुशी में बजाते जाओ भैया ढोल नगाड़े और चंग
सत बाप के रंग में रंगकर रहो हर पल उसके समीप
योग बल से जलाओ अपनी आत्म स्मृति का दीप
बाप से मिलन मनाने वालों का हर दिन है त्योंहार
सदा बाप की गोद में बैठे रहो तो माया करे न वार
बाप मिलातो सिर्फ बाप संग होली ही नहीं मनाओ
बाप के संग का रंग लगने का रूहानी रूप दिखाओ
कल्प के बाद मिली है हमको ये रूहानी मीठी मस्ती
सजा दो इस रूहानी रंग से दुनिया की हर इक बस्ती
अति इन्द्रिय सुख का झुला सदा बाप के संग झूलो
दुखहर्ता मिल गया अब अपनी सारी चिंताएं भूलो
उमंग उत्साह सदा बना रहे बाप के संग में रहकर
अब पिछली सारी बातें भुला दो ॐ शांति कहकर

आत्मस्वरूप में स्थित होकर त्यागो अपना अहंकार
भेदभाव मिटाकर सारे करते जाओ सबका सत्कार
अपनी हर आदत दुधारो बाप की संगत में आकर
देह के रिश्ते भूलो बाप का अविनाशी प्यार पाकर
अवगुण देखे बिना वो हम पर होता मेहरबान बड़ा
मुश्किल में साथ देने के लिए वो रहता है सदा खड़ा
अपने स्वरूप की विस्मृति से करो न खुद को निर्बल
स्मृति स्वरूप से समर्थ बनकर बनाओ खुद को सबल
क्यूँ क्या की भाषा से ना कहलाओ खुद को भक्त
प्रश्न कोई आये नहीं पहरा लगा दो मन पर सख्त
क्यूँ क्या करने वाले बच्चे संशय बुद्धि कहलाते हैं
ऐसे बच्चे कभी भी स्वर्ग में ऊंच पद नहीं पाते हैं
ठान लो कोई भी प्रश्न अपने मन में नहीं उठायेंगे
समर्पित बुद्धि से हम खुद को बाप समान बनायेंगे
वादा करो चढ़ा रहेगा हम पर बाप के संग का रंग
जागी रहेगी मन में हमारे ईश्वरीय सेवा प्रति उमंग
ॐ शांति